को जाना जा सकता है और तभी यह बोध हो सकता है कि श्रीकृष्ण स्वयं भगवान् हैं।

स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम।
भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते।।१५।।

स्वयम्=स्वयं; **एव**=ही; **आत्मना**=अपने से; **आत्मानम्**=अपने को; **वेत्थ**=जानते हैं; **त्वम्**=आप; **पुरुषोत्तम**=हे पुरुषोत्तम; **भूतभावन**=हे सम्पूर्ण भूतों को उत्पन्न करने वाले; **भूतेश**=हे भूतों के ईश्वर; **देवदेव**=हे देवों के देव; **जगत्पते**=हे जगत् के स्वामिन्।

अनुवाद

हे भूतभावन ! हे परमेश्वर ! हे देवदेव ! हे पुरुषोत्तम ! हे जगत् के स्वामिन् ! वास्तव में आप स्वयं ही अपने को अपनी शक्ति से जानते हैं।।१५।।

तात्पर्य

परमेश्वर श्रीकृष्ण को वे ही मनुष्य जान सकते हैं, जो अर्जुन और उसके अनुगामियों की भाँति भक्तियोग के द्वारा उनसे सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं। आसुरी अथवा निरीश्वरवादी स्वभाव वाले श्रीकृष्ण के तत्त्व को नहीं जान सकते। श्रीभगवान् से विमुखकारी मनोधर्म गम्भीर पाप है; इसलिए जो श्रीकृष्ण के तत्त्व को नहीं जानता, वह भगवद्गीता पर टीका करने का दुस्साहस न करे। गीता स्वयं भगवान् श्रीकृष्ण के मुखारविन्द की वाणी है। इस कृष्ण-विज्ञान को श्रीकृष्ण से उसी भाँति हृदयंगम करना चाहिए, जैसे अर्जुन ने किया। भाव यह है कि गीता-शास्त्र की शिक्षा अनीश्वरवादियों से कभी नहीं लेनी चाहिये।

परम सत्य की प्राप्ति निर्विशेष ब्रह्म, अन्तर्यामी परमात्मा और अन्त में श्रीभगवान् के रूप में होती है। भाव यह है कि श्रीभगवान् की प्राप्ति ज्ञान की पराकाष्ठा है। मुक्त पुरुषों को ही क्यों, निर्विशेष ब्रह्म और एकदेशीय परमात्मा की अनुभूति तो साधारण मनुष्य को भी हो सकती है; परन्तु भगवान् श्रीकृष्ण की वाणी—गीता के श्लोकों से उन पुरुषोत्तम का तत्त्व जानना इतना सुगम नहीं है। निर्विशेषवादी भी कभी-कभी श्रीकृष्ण को भगवान् या परमेश्वर मान लेते हैं। पर प्रायः देखा जाता है कि मुक्त पुरुष तक यह नहीं समझ पाते कि श्रीकृष्ण पुरुषोत्तम हैं और जीवमात्र के पिता हैं। यही दिखाने के लिए अर्जुन ने उन्हें **पुरुषोत्तम** सम्बोधित किया है। इतना ही नहीं, श्रीकृष्ण **भूतेश** हैं, अर्थात् सम्पूर्ण सृष्टि के परम नियन्ता हैं। हो सकता है कि श्रीकृष्ण के परमेश्वरत्व को जान लेने पर भी यह बोध न हो कि वे देवगणों के भी आराध्य आदिदेव हैं; अतः उन्हें **देवदेव** कहा गया है। उन्हें **जगत्पति** कहकर यह सत्य स्थापित किया है कि वे विश्व की सम्पूर्ण सम्पति के परम अधीश्वर हैं। अस्तु, इस श्लोक में अर्जुन की अनुभूति के रूप में श्रीकृष्ण का तत्त्व स्थापित हुआ है। जो श्रीकृष्ण को तत्त्व से जानने का जिज्ञासु हो, उसे अर्जुन के चरणचिह्नों का अनुगमन करना चाहिये।